[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3450

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मूक –बधिर कलाकारों की नृत्य, गीत अभिनय विधा व कोरियोग्राफी(एक अध्ययन)

योगेंद्र सिह नरुका फूलैता
प्रभारी
राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक–बधिर संस्थान, जयपुर (राजस्थान)

सुर व संगीत के बिना सामान्य कलाकारों के लिए नृत्य करना मुश्किल कार्य है लेकिन मूक–बधिर कलाकारों के लिए यह उतना ही सहज हैं। मूक–बधिर कलाकारों के लिए सुर व संगीत का कोई प्रयोजन नहीं है। यह कलाकार संगीत की किसी तान पर नहीं थिरकते अपितु यह अपने कोरियोग्राफर के ईशारों पर थिरकते है।इनकी नृत्य विधा डान्स विदआऊट म्यूजिक की धारणा पर आधारित होती हैं।मूक–बधिरों की सांकेतिक भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाला कोरियोग्राफर इन्हे नृत्य में पारंगत बना सकता है।

मूक–बधिर कलाकार भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधा को आसानी से समझ सकते हैं,क्योकि भारतीय शास्त्रीय संगीत में जितना महत्व संगीत का है, उतना ही महत्व आंगिक हाव–भाव का भी हैं।भारतीय शास्त्रीय नृत्य –नाटिकाओं का विषय समझने के बाद नाटिका का बिना सुर–संगीत के भी रसास्वादन किया जा सकता है।

मूक–बधिर कलाकारों को नृत्य विधा सिखाने से पूर्व कोरियोग्राफर को कुछ आवश्यक तैयारियाँ करनी होती हैं। जिस गीत पर मूक–बधिर कलाकारों को नृत्य सिखाना हैं उसके सभी चरण कोरियोग्राफर को याद करना होता है तथा गीत का सरल सांकेतिक भाषा मे रूपान्तरण करना होता है। कोरियोग्राफर गीत सुनता है तथा उसके अनुसार मूक–बधिर कलाकारों की सांकेतिक भाषा में कोरियोग्राफी करता है।मूक–बधिर कलाकारों व कोरियोग्राफर के सुन्दर सामन्जस्य से सामान्य दर्शकों में यह भ्रम पैदा किया जा सकता हैं कि यह कलाकार गीत–संगीत सुनकर नृत्य कर रहें हैं।

इसी तरह से मूक–बधिर कलाकार अपनी भावनाओं को गीत गाकर अभिव्यक्त नहीं कर सकते लेकिन उस गीत को सांकेतिक भाषा में रुपान्तरित कर अपने हाव–भाव के माध्यम से उस गीत का मर्म प्रकट कर सकते है।

मूक–बधिर कलाकार हालांकि गीत –संगीत नहीं सुन सकते लेकिन आजकल की आधुनिक संगीत विधा के माध्यम से मंच पर होने वाले वाईब्रेशन (कम्पन) से रिद्म का आभास लगा सकते है।वाईब्रेशन युक्त रिद्म को आजकल के आधुनिकतम मोबाईल उपकरणों में भी प्रयोग किया जा रहा है। म्यूजिक वाईब्रेशन जब किसी मूक बधिर कलाकार के शरीर के हिस्से को छूता है तो उस वाईब्रेशन के माध्यम से उसे उस म्यूजिक के निम्न व उच्च स्तर का बोध हो सकता है लेकिन अभी तक इस तकनीक का उपयोग नहीं के बराबर किया जा रहा हैं।

मूक बधिर कलाकार की अभिनय क्षमता भी बेजोड़ होती हैं।इनके इस अभिनय को मूकाभिनय के नाम से जाना जाता है। यह अभिनय सामान्य कलाकारों के द्वारा भी प्रस्तुत किया जाता रहा है । इस अभिनय में कलाकार अपनी प्रस्तुती के दौरान संवाद का उपयोग नहीं करता अपितु अपने हावभाव के माध्यम से ही अभिनय करता है जिसका कि अपना एक अलग ही आनन्द होता है।मूक–बधिरों की इस लोकप्रिय विधा से समाज के सभी वर्ग परिचित हैं तथा इस विधा से सम्बन्धित अनेक प्रकार के सिनेमा, नाटक आदि भी बनाये जाते रहे हैं। जो समय समय पर दृश्य साधनों के माध्यम से प्रसारित होते रहते हैं।

वर्तमान में मूक बधिर कलाकारों के प्रति समाज के प्रत्येक वर्ग को संवेदनशील होने की व उनकी कला की कद्र करने की आवश्यकता है।